विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 10 : नई दिल्ली : 1-7 जून 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए आंध्रप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में सानंद विहरण कर रहे हैं। गर्मी अपने चरम पर है। जून के प्रथम सप्ताह में मानसून आंध्रप्रदेश में प्रवेश कर जाएगा, ऐसी संभावना जताई जा रही है, किन्तु फिलहाल तो प्रखर आतप और तीव्र उमस दिन-रात शरीर को पसीने से भिगोए रखते हैं। पूज्यप्रवर जुलाई के प्रथम सप्ताह में तमिलनाडु में प्रवेश करेंगे। तदुपरान्त चेन्नई के विभिन्न क्षेत्रों की उपनगरीय यात्रा करेंगे। अपने आराध्य के आगमन और चतुर्मास के संदर्भ में चेन्नईवासियों का उल्लास निरंतर बढ़ता जा रहा है। वे लोग चतुर्मास-प्रवास की तैयारियों में निष्ठा के साथ जुटे हैं। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर २१ जुलाई को चेन्नई के 'माधावरम्' में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आन्ध्रप्रदेश में

सूर्य और मेघ की जय-पराजय के बीच गतिमान परीषहजयी व आत्मजयी आचार्यप्रवर

२३ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः गुन्डुगोले से एलुरु की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर कुछ ही दूर पर स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर-१६ पर पधारे। राजमहेन्द्रवरम् से पहले पूज्यप्रवर इसी राजमार्ग पर यात्रायित थे। मार्ग में लगाए गए एक बोर्ड के अनुसार कोलकाता ११७६ कि.मी. दूर स्थित था, किन्तु आचार्यप्रवर ने यहां तक पधारने के लिए करीब दुगुनी दूरी तय कर ली।

एलुरु में मूर्तिपूजक जैन समाज के करीब ६० परिवार प्रवास करते हैं, ऐसी जानकारी मिली। एलुरु जैन समाज के कई लोग पूज्यप्रवर के प्रस्थान से पूर्व ही मार्गसेवा हेतु पहुंच गए थे। आचार्यप्रवर के पदार्पण से वे उत्साहित दिखाई दे रहे थे। काकिनाड़ा से चेन्नई को जलमार्ग से जोड़ने की केन्द्र सरकार की योजना को मूर्त रूप देने का कार्य राजमार्ग के निकट गतिमान था, किन्तु उसकी गति काफी मंथर दिखाई दी।

वृक्ष राजमार्ग से कुछ दूरी पर अवस्थित थे, इस कारण उनकी छाया राहगीरों के लिए प्रायः अनुपलब्ध थी। इसलिए सूर्य स्वच्छंदता के साथ अपना आतप बरसा रहा था। आज एक महान यायावर इस पथ पर गतिमान थे, इस बात को मानों बादलों ने जान लिया और थोड़ी ही देर में सूर्य के आतप को बाधित कर दिया। तमतमाए सूर्य ने कुछ ही समय पश्चात् बादलों को छिन्न-भिन्न कर दिया तो बादलों ने पुनः हवा की सवारी कर सूर्य को अदृश्य बनने के लिए विवश कर दिया। इस प्रकार कभी सूर्य विजय प्राप्त कर रहा था तो कभी बादल। सूर्य और मेघ समूहों के इस जय-पराजय के बीच परीषहजयी और आत्मजयी महापुरुष आचार्यप्रवर मन्द मुस्कान लिए गतिमान थे। लगभग १२.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर एलुरु में स्थित एलुरु सीताराम राजू एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस परिसर के नर्सिंग कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'विनाश का समय निकट आता है तो बुद्धि भी अच्छा कार्य करे अथवा नहीं, वह विपरीत भी हो सकती है। शुद्ध बुद्धि कामधेनु के समान होती है। अशुद्ध बुद्धि दुःखदायक हो सकती है। आदमी की बुद्धि शुद्ध रहनी चाहिए।

बुद्धि के द्वारा किसी का बुरा भी किया जा सकता है, समस्या को उत्पन्न किया जा सकता है और बुद्धि के द्वारा किसी के कल्याण का प्रयास भी किया जा सकता है, समस्या का समाधान भी किया जा सकता है।

ईर्ष्या विकास में बाधक बनती है। दूसरों को सुखी देखकर स्वयं को दुःखी नहीं बनना चाहिए और दूसरों को दुःखी देखकर स्वयं को सुखी नहीं बनना चाहिए। दूसरों को दुःखी देखकर यह चिंतन करना चाहिए कि इनको चित्त समाधि कैसे प्राप्त हो। समाज में केकड़ावृत्ति नहीं रहनी चाहिए। कोई अच्छा विकास कर रहा है तो उसमें बाधक बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। दूसरों की उन्नति देखकर जलना नहीं चाहिए। आदमी में प्रमोद भावना रहनी चाहिए।

दूसरों को दुःखी बनाने की भावना अधम कामना होती है। उत्तम कामना यह है कि मेरा भी आध्यात्मिक विकास हो और दूसरों का भी आध्यात्मिक दृष्टि से उत्थान हो। मन पवित्र संकल्पों वाला रहना चाहिए। मन में विचार आते रहते हैं, आदमी यह ध्यान रखे कि उनमें मलिनता न रहे, शुद्धता रहे। मन में बुरे विचार आएं तो पवित्र आत्मा का स्मरण कर लेना चाहिए। जितनी भावात्मक शुद्धि होती है, आत्मा उतनी ही पवित्र रह सकती है।

भावना भावना में भी अंतर होता है। एक बिल्ली चूहे को भी मुंह में लेती है और अपने बच्चों को भी मुंह में लेती है, किन्तु दोनों क्रियाएं प्रायः समान होते हुए भी भावना का कितना अंतर होता है। इसी प्रकार डॉक्टर भी पेट को चीरता है और किसी दृष्टि से डाकू भी पेट चीरता है, किन्तु दोनों क्रियाओं में भावना का बड़ा अंतर हो सकता है। आदमी का चित्त प्रमोद भावना से भावित रहे, यह भावना कल्याणकारी होती है।'

एलुरु मूर्तिपूजक जैन समाज की ओर से श्री मूलचंद जैन ने आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'यह हमारा सौभाग्य है कि एलुरु की एरिया में परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी का पदार्पण हुआ है। इस कृपा के लिए हम आचार्यश्री के आभारी रहेंगे। मैं जन संघ की ओर से आचार्यश्री का स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

सायंकाल मौसम ने करवट ली और तेज तूफान के साथ आसमान में बादल छा गए। वर्षा तो नहीं हुई, किन्तु वातावरण में शीतलता व्याप गई। यह शीतलता आसपास में कहीं वर्षा का संकेत लिए हुए थी।

दया से संभव है कल्याण

२४ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर एलुरु से वटलुर की ओर प्रस्थित हुए। आज के विहार के दौरान प्रकृति प्रायः अनुकूल बनी रही। पीछे की ओर स्थित सूर्य को कभी बादल बाधित कर रहे थे तो कभी मार्ग के परिपार्श्वस्थ सघन वृक्षों की छाया। मंद-मंद बहती हुई हवा आतप के अहसास को और भी मंद बना रही थी। यत्र-तत्र खड़े लोग पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। लगभग १२.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर वटलुर में स्थित सर एस.आर.रेड्डी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में पधारे। संस्थान परिसर के छात्रावास में आचार्यप्रवर का प्रवास निर्धारित था, किन्तु स्थान की प्रतिकूलता को देखते हुए प्रवचनोपरान्त पूज्यप्रवर का प्रवास इसी संस्थान परिसर के एम.बी.ए. ब्लॉक में हुआ।

आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर और मुनि मेघ के घटनाक्रम को सुनाकर कहा--'एक पशु में भी दया की चेतना का विकास हो सकता है। मनुष्य को तो अपनी दया चेतना को विकसित करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। दूसरों को पीड़ा पहुंचाना पाप होता है। आदमी यह प्रयास रखे कि उसकी ओर से किसी को कष्ट न पहुंचे। हो सके तो किसी के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।

शरीर के होते हुए हिंसा से पूर्णतया बचना बहुत-बहुत मुश्किल होता है। आदमी अपनी ओर से

यथासंभव हिंसा से बचने का प्रयास करे, यह काम्य है। मन में अनुकंपा रहनी चाहिए। दया एक ऐसा तत्त्व है, जिसके आधार पर आदमी अनेक पापों से बच सकता है। जीवन व्यवहार में अहिंसा, दया रहनी चाहिए। दया के द्वारा स्वयं का कल्याण हो सकता है। आदमी आध्यात्मिक भावना से दया की साधना करने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

मध्याह्न में कॉलेज संस्थान के प्रेसिडेंट श्री के. रामबाबू ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वे अपने संस्थान में परम पूज्य आचार्यप्रवर का एकदिवसीय प्रवास प्राप्त कर अतिशय आह्लादित थे।

द्वंद्वात्मक स्थितियों में रहे समभाव

२५ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर सूर्योदय के करीब एक घंटे के उपरान्त वटलुर से अप्पनावीडू की ओर प्रस्थान किया। सूर्य आज मानों कुछ अधिक तेजस्विता लिए हुए उदित हुआ। तीखी धूप शरीर को 'बींध' रही थी, किन्तु यत्र-तत्र स्थित वृक्षों की छाया आतप को रोककर महातपस्वी आचार्यप्रवर की सेवा कर रही थी। थोड़ी देर बाद आसमान में बादल भी दिखाई देने लगे। बादलों की टुकड़ियां हवा के सहयोग से क्रमशः सूर्य के आतप को बाधित कर वातावरण को कुछ अनुकूल बनाने का प्रयास कर रही थीं। कहीं छाया और बादल अपने कार्य में सफल बन रहे थे तो कहीं सूर्य अपनी किरणों के द्वारा प्रखर आतप बरसा रहा था।

मार्ग में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित 'युवा वाहिनी' के अंतर्गत पूज्यप्रवर की मार्गसेवा में आने वाले युवकों के लिए बनाई गई बस के समीप बस के प्रायोजक तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई के सदस्यों ने मंगलपाठ का श्रवण किया।

करीब १०.२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर अप्पानावीडू में स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में समस्या आ सकती है, किन्तु समस्या की स्थिति में दुःखी और अशांत होना सही नहीं है। समस्या के होने पर भी आदमी शांत, प्रसन्न और सुखी रह सकता है। समस्या की गहराई में जाकर समस्या के समाधान का प्रयास किया जा सकता है, किन्तु समस्या से व्याकुल नहीं बनना चाहिए। आदमी की जीवनशैली अच्छी हो तो वह दुःखमुक्त रह सकता है। समता की साधना के द्वारा आदमी विशेष रूप से प्रसन्न रह सकता है।

जीवन में द्वंद्वात्मक स्थितियां आ सकती हैं, किन्तु आदमी को उनमें मानसिक संतुलन रखना चाहिए। व्यापार में ज्यादा मुनाफा हो तो ज्यादा खुश नहीं होना चाहिए और घाटा हो जाए तो ज्यादा दुःखी नहीं बनना चाहिए। सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा और सम्मान-अपमान जैसी द्वंद्वात्मक स्थितियों में समतालीन रहना चाहिए।

साधु के जीवन में तो समता रहनी ही चाहिए, गृहस्थ भी यथासंभव समता में रहने का प्रयास करे, यह काम्य है। साधु हो या गृहस्थ, जो समतालीन रहता है, वह सुखी रह सकता है। जीवन में समता है तो आदमी की आत्मा पवित्र बनती है।

सामायिक समता की साधना है। उसका प्रभाव लंबे समय तक रहना चाहिए। सामायिक के द्वारा यह प्रयास होना चाहिए कि हृदय में समता का संचार होता रहे। सामायिक की साधना तो एक मुहूर्त की होती है। उस एक मुहूर्त के प्रभाव से चित्त के भीतर समता का संचार हो जाए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी श्रावक-

श्राविकाएं शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच यथासंभव सामायिक करने का लक्ष्य रखें। समय की व्यवस्था यथासंभव इस प्रकार बिठानी चाहिए कि उस समय सामायिक हो जाए। परिवार के सदस्य अन्य सदस्यों को सूचना दे दें कि आज शनिवार है, आज सायं सामायिक का प्रयास करना है। यथासंभव यथानुकूलता तेरापंथ भवन आदि धार्मिक स्थानों में सामायिक करने का प्रयास करना चाहिए। वह संभव न हो तो घरों, दुकानों आदि में भी सामायिक की जा सकती है। शनिवार की सामायिक सायं सात बजे के बाद प्रारम्भ हो और आठ बजे से पहले-पहले पूरी हो जाए तो ठीक क्रम बनता है।'

बच्चों की फुलवारी के बीच गणमाली

कार्यक्रम के उपरान्त विजयवाड़ा का दीपेश कुण्डलिया नामक बालक पूज्यप्रवर के निकट पहुंचा। उसने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'मुझे पच्चीस बोल के तीन बोल आते हैं। मैं आपको सुनाना चाहता हूं।' आचार्यप्रवर ने वात्सल्य के साथ स्वीकृति प्रदान की तो उसने तीन बोल सुनाए। पूज्यप्रवर ने उसे चौथा बोल सीखने की प्रेरणा प्रदान की। इसी बीच विजयवाड़ा का सिद्धार्थ तातेड़ नामक बालक भी आ गया। वह बोला मैं भी सुनाना चाहता हूं। पूज्यप्रवर ने उसे भी वत्सलता के साथ स्वीकृति प्रदान की। उसने पूज्यप्रवर को आठ बोल सुनाए तो पूज्यप्रवर ने उसे नौवां बोल सीखने की प्रेरणा प्रदान की। इस दौरान तीसरा बालक आ गया। आचार्यप्रवर ने उससे नमस्कार महामंत्र और वंदनपाठ सुना। इस प्रकार क्रमशः बालकों की संख्या बढ़ते-बढ़ते दस के पार पहुंच गई। पूज्यप्रवर प्रायः सबसे कुछ न कुछ सुन रहे थे। थोड़ी ही देर में बालिकाओं का भी जमघट दूसरी ओर लग गया। पूज्यप्रवर ने उनसे भी पच्चीस बोल के चयनित बोल आदि सुने। इस प्रकार अनायास ज्ञानशाला का रूप बन गया। अभिभावक अपने बच्चों को आचार्यप्रवर की निकटता से उपासना करते देख हर्षविभोर थे। अन्य दर्शक भी बच्चों से घिरे हुए आचार्यप्रवर को देखकर आनंदित थे। उपस्थित बच्चे आचार्यप्रवर से कुछ नया सीखने की प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे।

पसीने से तरबतर तन की परवाह किए बिना गतिमान पूज्यचरण

२६ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः अप्पनावीडू से तेलाप्रोलू की ओर प्रस्थित हुए। आज के गंतव्य स्थल की दूरी को देखते हुए गत कल सायंकाल विहार करना था, किन्तु आगे जो स्थान प्राप्त हो रहा था, उसमें सब संतों के लिए अनुकूलता नहीं थी। इसलिए आचार्यप्रवर ने गत कल सायंकाल विहार नहीं किया तो आज का प्रातःकालीन विहार प्रलंब हो गया।

पूज्यप्रवर सूर्योदय के करीब एक घंटा पश्चात् प्रवास स्थल से प्रस्थित हुए। सूर्य आसमान में काफी उर्ध्वगमन कर चुका था, किन्तु आचार्यप्रवर की करीब छह कि.मी. की यात्रा तक बादलों ने उसे आच्छादित किए रखा। आखिर वह बादलों को चीरकर तेजस्विता लिए हुए दृश्यमान हुआ। उसकी तीखी धूप शरीर में चुभन का अहसास करवा रही थी। उमस सूर्य का साथ देते हुए शरीर को पसीने से नहला रही थी। बादल हार न मानकर पुनः-पुनः सूरज को बाधित कर रहे थे, किन्तु सूर्य की प्रखरता के सामने वे कुछ ही क्षण टिक पा रहे थे। सूर्य और बादलों का यह युद्ध प्रायः पूरे विहार के दौरान जारी रहा।

इस क्षेत्र की यात्रा में दिन-रात्रि में यदा-कदा उमस वातावरण में व्याप्त रहती है। इस कारण पूरा शरीर पसीने से तरबतर हो जाता है। वस्त्रों को प्रयत्नपूर्वक सुखा भी लिया जाए तो कुछ ही क्षणों बाद वे पुनः आर्द्र बन जाते हैं। कभी-कभी तो उमस इतनी प्रखर होती है कि घुटन-सी महसूस होने लगती है। सायंकाल कुछ हवा रहती है तो रात्रि में प्रायः प्रतिदिन हवा विश्राम-सा कर लेती है। हवा के अभाव में पेड़ों के पत्ते तो मानों कायोत्सर्ग में लीन हो जाते हैं। इन दिनों प्रायः प्रतिदिन आसमान में छाने वाले बादल स्थानीय

जनता के लिए भी आश्चर्य का विषय है। बताया गया कि इन दिनों में यहां सूर्य की प्रखरता ही व्याप्त रहती है। प्रायः ए.सी. में रहने वाले लोग जब आचार्यप्रवर की उपासना में पहुंचते हैं और जब वहां पंखा भी चलता हुआ नहीं मिलता है और वे पसीने से तरबतर आचार्यप्रवर के वस्त्र को देखते हैं तो वे साश्चर्य श्रीचरणों में प्रणत बन जाते हैं। इस भीषण गर्मी में मार्ग सेवारत श्रद्धालुओं के लिए आचार्यप्रवर की कष्ट सहिष्णुता बहुत बड़ा आलंबन है। उस आलंबन के सहारे वे भी प्रखर आतप के दौरान टेंट आदि में रह जाते हैं। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान वेस्ट गोदावरी जिले से 'कृष्णा' जिले में प्रवेश किया। लगभग १४.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर तेलाप्रोलू में स्थित उषा रमा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातराश के उपरान्त विजयवाड़ा पुलिस के असिस्टेंट कमिश्नर श्री वी. विजय भास्कर ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन का एक पारिभाषिक शब्द है--योग। शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति योग कहलाती है। योग शुभ और अशुभ दोनों होता है। जब योग के साथ मोह जुड़ जाता है तो तब योग अशुभ और जब योग मोहमुक्त रहता है, तब वह शुभ होता है। कषाय और योग के कारण कर्मबन्धन होता है। मन, वचन और काय की प्रवृत्ति शुभ रहे तो आत्मा अशुभ प्रवृत्तिजन्य अशुभ कर्मबन्धन से बच सकती है और कर्म निर्जरा भी हो सकती है।

हर प्राणी में तीनों योग नहीं होते। स्थावरकाय जीवों में मनोयोग और वचन योग नहीं होते। उनमें केवल काययोग होता है। त्रस--द्वीन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में भी मनोयोग नहीं होता, उनमें वचनयोग और काययोग--ये दो योग होते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रियों में तीनों योग होते हैं, जिनमें मात्र काययोग होता है, वे अविकसित प्राणी होते हैं। जिनमें काययोग के साथ वचनयोग भी है, वे अर्धविकसित प्राणी होते हैं और जिनमें तीनों योग होते हैं, वे विकसित प्राणी होते हैं। मनुष्य परम भूमिका को प्राप्त कर सकता है, इसलिए उसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जा सकता है। आदमी के तीनों योग शुद्ध रहें, यह काम्य है। योग शुद्ध रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कषाय की आग प्रज्वलित न हो। कषाय की आग शांत रहे तो योगों को अशुभता से बचाया जा सकता है।'

कार्यक्रम में विजयवाड़ा की श्रीमती सुनीतादेवी पुगलिया ने पूज्यप्रवर से २५ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती पुगलिया ने पूज्यप्रवर के विजयवाड़ा पदार्पण के संदर्भ में तीस दिनों की तपस्या की और आचार्यप्रवर के विजयवाड़ा में प्रवेश के दिन अर्थात् २८ मई को मासखमण का पारणा किया।

सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर ने तेलाप्रोलू से गन्नावरम् की ओर प्रस्थान किया। प्रखरता लिए सूर्य सामने की ओर स्थित था, किन्तु उसका आतप क्रमशः मंद होता जा रहा था। मंद-मंद हवा भी उसके आतप को हल्का बना रही थी। विजयवाड़ा पुलिस आज से पूज्यप्रवर की सेवा में संलग्न हो गई। विहार के दौरान पुलिसकर्मी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के आसपास यातायात आदि को नियंत्रित कर रहे थे। विहार के दौरान 'ट्रोलपोल' के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

राजस्थान में जिस प्रकार मार्ग के आसपास 'तरबूज' आदि बिकते हैं, इसी प्रकार यहां नारियल, ताड़फल, आम आदि की दुकानें मार्ग के किनारे लगी रहती हैं। पूज्यप्रवर करीब ५.५ कि.मी. का विहार कर गन्नावरम् में स्थित डॉ. पिन्नमनेनी सिद्धार्थ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन (मेडिकल कॉलेज) में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आंध्रप्रदेश में शिक्षा संस्थानों की भरमार दिखाई दे रही है। प्रायः सभी शहरों के आसपास कई शिक्षा संस्थान देखने को मिल रहे हैं। शिक्षा संस्थानों के विशाल परिसर और विशाल इमारतें यहां के लोगों की शिक्षा के प्रति रुझान को दर्शाते हैं। संस्थानों में अध्यापन करने वाली फेकल्टी भी स्तरीय प्रतीत होती है।

सायंकाल विहार के दौरान पूज्यप्रवर एक स्थान पर उदकपान (पानी पीने) के लिए आसीन हुए। मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर के समक्ष दैनिक रूप में ली जाने वाली औषधि प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने पानी के साथ उसे ग्रहण किया। तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने पुनः प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर कुछ दूर आगे पधारकर कुछ क्षण रुके और मुख्यमुनिश्री से पूछा--'औषधि लेते समय मेरे हाथ से तुम्हारे हाथ का स्पर्श हुआ था क्या? मुख्यमुनिश्री ने निवेदन किया--'गुरुदेव, मेरा ध्यान नहीं गया, संभवतः स्पर्श हुआ भी हो सकता है।'
आचार्यप्रवर ने वात्सल्यपूर्वक फरमाया--'खमतखामणा।'
मुख्यमुनिश्री सहित सभी दर्शक-श्रोता आश्चर्यचकित थे कि इतनी छोटी-सी बात के लिए भी पूज्यप्रवर खमतखामणा कर रहे हैं। सभी लोग क्षमा और करुणा के सागर आचार्यप्रवर की निरभिमानता और सहजता के प्रति प्रणत थे।

आज शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच होने वाली सामायिक को करने के लिए सैंकड़ों श्रद्धालु पूज्य सन्निधि में पहुंच गए। इस कारण सामायिक का एक सुन्दर दृश्य बन गया। पूज्यप्रवर के विजयवाड़ा पदार्पण के संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों के लोग भी विजयवाड़ा पहुंच चुके थे। वे और विजयवाड़ावासी शनिवार की सामायिक के प्रणेता आचार्यप्रवर के सान्निध्य में शनिवार की सामायिक कर आह्लादित थे।

बोधित्रयी से होती है आत्मविशोधि

२७ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः करीब ६.४१ बजे गन्नावरम् से गुडावल्ली की ओर प्रस्थित हुए। काफी उर्ध्वगमन कर चुका सूर्य आतप बरसा रहा था। क्रमशः प्रखर बनती तीखी धूप शरीर को मानों झुलसा रही थी। आज तो उमस भी सूर्य का साथ दे रही थी। दोनों मिलकर अपनी चपेट में आने वाले प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को पसीने से तरबतर बना रहे थे। बादलों ने मानों सूर्य की इस मनमानी का प्रतिकार करने की ठानी। वे मंद-मंद गति से आसमान में फैल गए और उन्होंने सूर्य को चारों ओर से घेर कर उसे अदृश्य बनने के लिए विवश कर ही दिया।

मार्ग के समीपस्थ विजयवाड़ा एयरपोर्ट पर खड़े हवाई जहाज विहारपथ से ही दृष्टिगोचर हो रहे थे। बताया गया कि यह दशकों पुराना हवाई अड्डा है। कुछ वर्षों पूर्व उसका नवीनीकरण किया गया है। करीब ११.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर गुडावल्ली में स्थित डॉ. के.के.आर. गौतम कांसेप्ट स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में वे क्षण महत्त्वपूर्ण होते हैं, जब अपने धर्माचार्य की दृष्टि और आज्ञा के अनुसार उनके उपपात में रहने और उनसे कुछ ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

हमारे जीवन में ज्ञान का विकास होना चाहिए। ज्ञानपूर्वक श्रद्धा सही हो सकती है। ज्ञानविहीन श्रद्धा निष्प्राण श्रद्धा-सी हो सकती है। श्रद्धा रूपी गाय ज्ञानरूपी खूंटे से बंधी रहनी चाहिए। सम्यक् ज्ञान और सम्यक् श्रद्धा के साथ सम्यक् चारित्र भी होना चाहिए, प्रत्याख्यान होना चाहिए। श्रावक वह होता है, जिसमें सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा और देशविरति होती है। आदमी को सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र रूपी बोधि प्राप्त हो जाती है तो शोधि हो सकती है। आत्मशोधि हो जाती है तो मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

अज्ञान को कष्ट कहा गया है। अज्ञानी व्यक्ति अपने हित-अहित का भी विवेक नहीं कर पाता। ज्ञान एक पवित्र चीज होती है। आदमी को यथानुकूलता सम्यक् ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञानशून्य आचार और आचारशून्य ज्ञान-दोनों अपने आप में अपूर्ण हैं। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की आराधना के द्वारा व्यक्ति परम कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर ने गुडावल्ली से एनीकेपाडू की ओर प्रस्थान किया। सम्मुखीन सूर्य आतप बरसाता हुआ शरीर को पसीने से नहला रहा था। विजयवाड़ा के असिस्टेंट कमिश्नर श्री वी. विजय भास्कर अपने दलबल के साथ स्वयं पूज्यप्रवर के साथ यातायात व्यवस्थाओं को सुचारू बनाने में संलग्न थे।

करीब ५.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर एनीकेपाडू में स्थित एस.आर.के. इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पधारे। पूज्यप्रवर का आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

स्वागत में सोल्लास उमड़ा विजयवाड़ा

२८ मई। पूज्यप्रवर ने प्रातः एनीकेपाडू से विजयवाड़ा की ओर प्रस्थान किया। अपने आराध्य का अपने शहर में प्रथम पदार्पण स्थानीय तेरापंथ समाज को हर्षाभिभूत बनाए हुए था। वे लोग सूर्योदय के पूर्व ही बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए।

पूज्यप्रवर के प्रस्थान से पूर्व कृष्णा जिला के संयुक्त जिलाधीश श्री बाबूराव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। कुछ ही समय बाद जिलाधीश श्री बी. लक्ष्मीकांत भी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए, किन्तु आचार्यप्रवर उस समय आवश्यक कार्य हेतु पधारे हुए थे। जिलाधीशजी को शीघ्र लौटना था, इसलिए वे पूज्यप्रवर के दर्शन नहीं कर पाए और लौट गए।

पूज्यप्रवर के विहार के दौरान धूप और उमस अपनी-अपनी रंगत बिखेरते हुए शरीर को पसीने से नहला रही थीं। विहार मार्ग से करीब आठ कि.मी. दूर स्थित नुन्ना बाजार के विषय में बताया गया कि वह एशिया का सबसे बड़ा 'आम' का बाजार है। वहां सैंकड़ों प्रजातियों के आमों का क्रय-विक्रय किया जाता है। आंध्रप्रदेश के एक मुख्य राजनीतिक दल--तेलगुदेशम पार्टी का अधिवेशन, जिसे 'महानाडू' कहा जाता है, विजयवाड़ा में ही आयोजित हुआ। चूंकि तेलगुदेशम पाटी वर्तमान में आंध्रप्रदेश की सत्ता में है, इसलिए सरकारी महकमों का उस आयोजन की व्यवस्थाओं में व्यस्त रहना स्वाभाविक भी है, किन्तु इतनी व्यस्तताओं के बावजूद स्थानीय प्रशासन आदि के लिए अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाएं भी प्राथमिकता की कोटि में हैं। अपने उच्चाधिकारियों के साथ पुलिसकर्मी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की सेवा में नियोजित हैं।

आंध्रप्रदेश के पूर्व-मध्य में कृष्णा नदी के तट पर बसा विजयवाड़ा करीब दो हजार वर्ष पुराना शहर है। प्राचीनकाल में इसे बैजवाड़ा के नाम से जाना जाता था। बताया गया कि इस शहर के नाम का संबंध देवी कनकदुर्गा से संबंधित है, जिसे स्थानीय लोग विजया कहते हैं। विजयवाड़ा के समीप ही आंध्रप्रदेश की राजधानी 'अमरावती' का निर्माण किया जा रहा है। सन् २०१४ में तेलंगाना की पृथक राज्य के रूप में स्थापना के बाद आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद तेलंगाना के अंतर्गत समाविष्ट हो गई। ऐसी स्थिति में यह निर्णय किया गया कि हैदराबाद दस से अधिक वर्षों तक दोनों राज्यों (आंध्रप्रदेश और तेलंगाना) की संयुक्त राजधानी रहेगी। तब तक आंध्रप्रदेश की राजधानी के रूप में अमरावती का निर्माण कर लिया जाएगा। इसी दृष्टि से अमरावती का निर्माण कार्य द्रुत गति से जारी है। हालांकि यह निर्मीयमाण शहर गुंटूर जिले में विजयवाड़ा से दक्षिण-पश्चिम में करीब बारह कि.मी. दूर तथा गुंटूर से उत्तर में करीब चौबीस कि.मी. दूर स्थित है, किन्तु संपूर्ण निर्माण के बाद दोनों शहर (विजयवाड़ा और गुन्टूर) भी इसी के अंग बन जाएंगे, ऐसी

संभावना बताई गई। अमरावती सतवाहन राजवंश के तेलगू राजाओं की प्राचीन राजधानी थी, इस आधार पर इस शहर का नाम अमरावती निर्धारित किया गया। उदडरायणपालम इलाके में निर्मीयमाण 'अमरावती' शहर का शिलान्यास २२ अक्टूबर २०१५ को हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के विजयवाड़ा पदार्पण से स्थानीय जैन एवं जैनेतर लोगों का उल्लास चरम पर था। लोग पलक-पांवड़े बिछाए पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थान-स्थान पर खड़े थे। पूज्यप्रवर करीब सात सौ मीटर का चक्कर लेकर स्थानीय तेरापंथ भवन की ओर पधारे। मार्ग में कुछ श्रद्धालुओं को अपने-अपने घर के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ। मार्ग में विजयवाड़ा गुरुनानक कॉलोनी के विधायक श्री गण्डेराव मोहनराव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर भावभीना स्वागत किया। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को संबोधित करते हुए कहा--'आज विजयवाड़ावासियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है कि जैन मत के महान गुरु हमारे शहर में आए हैं। जिस प्रकार महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर देश को स्वतंत्र बनाया था, उसी प्रकार स्वामीजी (आचार्यश्री) अहिंसा के द्वारा देशवासियों को बुरी आदतों की गुलामी से निजात दिलाकर स्वतंत्र बना रहे हैं। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य बहुत सारपूर्ण हैं। इन तीनों को देश-विदेश में फैलाना बहुत बड़ा कार्य है। स्वामीजी जनता में परिवर्तन लाने के लिए कृतसंकल्प हैं।'

पूज्यप्रवर पुनर्निर्मित तेरापंथ भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। आचार्यप्रवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान करते हुए उपस्थित श्रावक समाज को पावन प्रेरणा प्रदान की।

तेरापंथ भवन से प्रस्थान के कुछ ही समय पश्चात् विजयवाड़ा के पुलिस कमिश्नर श्री डी. गौतम स्वांग ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया। वे बोले--'आज आपके दर्शन कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आपकी सेवा का अवसर प्राप्त होना हमारा सौभाग्य है। आप अहिंसा यात्रा के द्वारा मानव-मानव का कल्याण कर रहे हैं।' वे जाते-जाते लोगों से बोले--'मैंने रैलियां बहुत देखीं, किन्तु अहिंसा की रैली पहली बार देखी।'

मार्ग में मूर्तिपूजक समाज के आचार्यश्री विजयजयन्तसेनसूरिजी के शिष्य मुनि संयमरत्नविजयजी और मुनि भुवनरत्नविजयजी ने आचार्यप्रवर की अगवानी की। वे पूज्यप्रवर को वंदन कर बोले--'विजयवाड़ा में आपका स्वागत है।' उन्होंने आचार्यप्रवर से पूर्व में तीन बार हुई अपनी भेंट का भी जिक्र किया। मुनिद्वय प्रवास स्थल पहुंचने तक पूज्यप्रवर के आसपास चले।

भव्य स्वागत जुलूस में स्थानीय तेरापंथ समाज के लोग तो उल्लासपूर्ण संभागिता लिए हुए थे ही, अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोग भी बड़ी संख्या में सोत्साह संभागी बने हुए थे। बुलन्द जयघोषों में मुखर हो रही थी विजयवाड़ावासियों की आंतरिक प्रसन्नता। स्थानीय मूर्तिपूजक समाज, स्थानकवासी समाज, दिगम्बर समाज, अग्रवाल समाज, ब्राह्मण समाज, माहेश्वरी समाज, सिख समाज, तेलगू समाज, गुजराती समाज, गुरुनानक वेलफेयर सोसायटी, जय श्री राम वॉकर्स ग्रुप, रुट्स हेल्थ फाउण्डेशन, सिख समाज, जीतो आदि विभिन्न समाजों व संस्थाओं से जुड़े लोगों की उपस्थिति से स्वागत जुलूस और भी भव्यता लिए हुए था। मार्ग के आसपास खड़े लोग नतसिर होकर पूज्यचरणों में प्रणति अर्पित कर रहे थे।

तेरापंथ भवन से प्रारम्भ हुआ भव्य स्वागत जुलूस रमेश हॉस्पिटल, अन्ना कल्याण मण्डपम् होते हुए सिद्धार्थ कॉलेज पहुंचा पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय विजयवाड़ा प्रवास यहीं हुआ।

सिद्धार्थ कॉलेज ऑडिटोरियम में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'तीन प्रकार की

बोधि बताई गई हैं--ज्ञानबोधि, दर्शनबोधि और चारित्रबोधि। आध्यात्मिक संदर्भ में किसी चीज का सम्यक् ज्ञान हो जाए, उसके प्रति सम्यक् श्रद्धा हो और श्रद्धानुरूप सम्यक् आचरण हो जाए तो बोधित्रयी का अनुसरण हो जाता है।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन पाथेय प्रदान किया।

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित मूर्तिपूजक समाज के मुनि संयमरत्न विजयजी ठाणा-२ के संदर्भ में कहा--'आज हमारा विजयवाड़ा आना हुआ है और मूर्तिपूजक संप्रदाय के संतों से भी मिलना हो गया। जैन शासन की खूब अच्छी सेवा होती रहे और मानव जाति की भी सेवा होती रहे।'

पूज्यप्रवर ने उपस्थित विजयवाड़ावासियों को प्रेरणा प्रदान कर अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए।

आचार्यप्रवर! आप में ही करेंगे हमारे गुरु के दर्शन

मूर्तिपूजक संप्रदाय के मुनि संयमरत्न विजयजी ने कहा--'हम सभी श्रमणों के भव-भय को हरने वाले महासंत आचार्यश्री महाश्रमणजी आज इस विजयवाड़ा नगर में पधारे हैं। गत दिनों मेरा कण्ठ इतना अवरुद्ध हो गया कि आवाज भी साफ नहीं निकल पा रही थी, लेकिन आज गला बिल्कुल ठीक है और आवाज भी स्पष्ट आ रही है। मेरा मानना है कि यह सब आचार्य भगवन्त महाश्रमणजी का ही चमत्कार है। आचार्यश्री! आज आपके दर्शन कर मन आह्लादित हो रहा है।

आचार्यप्रवर! आपके धर्मसंघ का मुझ पर उपकार है कि लाडनूं में स्थापित जैन विश्वभारती शिक्षण संस्थान से मैंने बी.ए., एम.ए. का अध्ययन सम्पन्न किया और पी.एच.डी. भी की। जब हमें यह जानकारी मिली कि आपश्री विजयवाड़ा पधार रहे हैं तो आपके दर्शन के लिए विजयवाड़ा में १०-१५ दिन और रुक गए। इससे पूर्व भी तीन बार आपके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आपकी अहिंसा यात्रा जन-जन का कल्याण करने वाली है। इसके माध्यम से जिसके भी जीवन में अहिंसा उतर जाएगी, उसका बेड़ा पार हो जाएगा। अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प तो जीवन के अनमोल मोती हैं। हमारा भी आगामी चतुर्मास चेन्नई में है। वहां हम आपके सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। आपकी ऐसी ही मधुर कृपा हम पर बनी रहे ताकि चतुर्मास के दौरान आपके दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका हमें मिलता रहे। आपके आशीर्वाद से हमारा साधु जीवन भी उच्च से उच्चतर बनता रहे। हमारे गुरु आचार्य भगवन्त विजयजयन्तसूरिश्वरजी का एक साल पूर्व देवलोकगमन हो गया था। अब हमारे गुरु के रूप में तो आप ही हैं और हम आप में ही अपने गुरु को देखेंगे और आनंद का अनुभव करेंगे।' उन्होंने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान भी किया।

विजयवाड़ा की तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री दिनेश श्यामसुखा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनोज पुगलिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम डोसी और अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री निरलेश डागा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। विजयवाड़ा के तेरापंथी समाज ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

प्रबल पुण्योदय से मिला है आचार्यश्री के दर्शन का सुअवसर

अमरावती के विधायक श्री तेनाली श्रवण कुमार ने कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री

महाश्रमणजी के 'आंध्रप्रदेश' राज्य में प्रवेश के अवसर पर मुझे आपके दर्शन और स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आज मैं तेलगुदेशम पार्टी के अधिवेशन के बीच से इजाजत लेकर आपके दर्शनार्थ और स्वागत हेतु उपस्थित हुआ हूं। मैं इसे मेरा प्रबल पुण्योदय ही मानता हूं कि मुझे दुबारा ऐसे महापुरुष के चरणों में शीश नमाने का सुअवसर मिला। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य अत्यंत प्रासंगिक हैं। वे वर्तमान काल की आवश्यकता हैं। इतनी लंबी पदयात्रा करना कोई आसान कार्य नहीं है। इस यात्रा में आप द्वारा किया जाने वाला पुरुषार्थ प्रशंसनीय ही नहीं, स्तुत्य भी है। अमरावती के निर्माण और विकास के लिए आचार्यश्री का आशीर्वाद हम पर बना रहे।'

समणी सत्यप्रज्ञाजी और समणी रोहिणीप्रज्ञाजी ने करीब नौ माह तक मायामी यूनिवर्सिटी के रिलिजियस डिपार्टमेंट में अध्यापन कार्य कर गत कल पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आज के कार्यक्रम में समणीद्वय ने गुरुदर्शन से प्राप्त अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व आंध्रप्रदेश पुलिस के डायरेक्टर जनरल (डी.जी.पी.) श्री एम. मालकोंडैया ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति भी प्रदान की।

न डरो, न डराओ

२९ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः दो अक्षम श्रद्धालु महिलाओं को दर्शन देने हेतु प्रातः उनके निवास स्थान के समीप पधारे। अपने आराध्य के इस अनुग्रह में अभिस्नात दोनों श्रद्धालु महिलाएं एवं उनके परिजन हर्षाभिभूत थे। अनेक श्रद्धालु परिवारों को भी मार्ग में अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार कुल करीब ढाई कि.मी. की यात्रा सम्पन्न कर पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्बोधन हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में अनेक प्रकार के दान चलते हैं। अन्नदान, वस्त्रदान, जलदान, आश्रयदान आदि। दानों में अभयदान को श्रेष्ठ कहा गया है। छहकाय के जीवों को मारने का त्याग कर देना अभयदान होता है। आदमी को अभय की साधना करनी चाहिए। अभय में दोनों अर्थ समाविष्ट हैं न डरना और न डराना। भयवश आदमी हिंसा, झूठ आदि में चला जाता है। अहिंसा और यथार्थ की साधना के लिए अभय होना आवश्यक है। आदमी की शक्ति किसी को डराने में प्रयुक्त न हो। भयभीत आदमी दयनीय बन जाता है।

भय का प्रसंग उपस्थित होने पर किसी पवित्र आत्मा, महापुरुष को याद करना चाहिए। अभय का भाव पुष्ट करने के लिए मैत्री की साधना करनी चाहिए। अभय की अनुप्रेक्षा के द्वारा भी अभय की चेतना को विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है।

संघर्षों की स्थिति में आदमी का मनोबल बना रहना चाहिए। उसे भयभीत नहीं होना चाहिए। डरपोक आदमी कमजोर होता है। भयभीत को दूसरे लोग भी डरा सकते हैं। आदमी दुःख से डरता है। आदमी को दुःख से घबराना भागना नहीं चाहिए। उसका समुचित स्वागत करने का प्रयत्न करना चाहिए। दुःख के निवारण का प्रयास किया जा सकता है, किन्तु उनसे डरना नहीं चाहिए। मुसीबतों से डरें नहीं तो उनका समाधान कुछ सुलभ हो सकता है।'

सूयगड़ो के अंग्रेजी अनुवाद का प्रथम खण्ड लोकार्पित

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'सूयगड़ो' के अंग्रेजी अनुवाद का प्रथम खण्ड जैन विश्व भारती

के अध्यक्ष श्री रमेश बोहरा और तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया। ज्ञातव्य है कि इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी तथा स्व. जे.एस.जवेरी ने किया है। मुनि मोहजीतकुमारजी की कृति 'मनपसंद गीत' और मुनि संबोधकुमारजी की कृति 'डिस्कवर लाइफ' भी जैन विश्व भारती की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गईं।

तेरापंथी महासभा के अंतर्गत आंध्रप्रदेश राज्य के आंचलिक प्रभारी श्री नरेन्द्र नाहटा, अणुव्रत महासमिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री विमल बैद, विजयवाड़ा तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री जगदीश कोठारी, श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ वनटाउन विजयवाड़ा के सचिव श्री अशोक जैन और श्रीमती सीमा गोलछा ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

स्थानीय तेरापंथ कन्या मंडल ने गीत के द्वारा अहिंसा यात्रा की रोमांचक घटनाओं को प्रस्तुति दी। ज्ञातव्य है कि तेरापंथ कन्या मंडल ने इन घटनाओं के प्रवास स्थल के समीप 'मॉडल' आदि के माध्यम से दर्शाया है। विजयवाड़ा तेरापंथ समाज की ओर से पूज्यचरणों में संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया गया।

आज सिद्धार्थ एकेडमी के चेयरमेन श्री नलूरी वेंकटेश्वर राव, सिद्धार्थ डिग्री कॉलेज के डायरेक्टर श्री बाबूराव व सिद्धार्थ डिग्री कॉलेज के प्रिन्सिपल श्री रमेश बाबू ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

अनुपम स्मरण शक्ति के सामने नतमस्तक हुए दर्शक और श्रोता

२५ अप्रेल को मुनि हेमराजजी (श्रीडूंगरगढ़) और जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति श्री बच्छराजजी दुगड़ आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। श्री दुगड़ ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'पूज्यप्रवर! मुनिश्री मेरा परिचय करवाने मुझे यहां लेकर पधारे हैं।'

मुनि हेमराजजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'बच्छराजजी मेरे संसारपक्षीय मामा हैं।'

आचार्यप्रवर--'भाईजी!'

मुनिश्री ने फिर कहा--'नहीं, मामा।'

आचार्यप्रवर ने फिर फरमाया--'भाईजी!'

मुनिश्री ने पुनः कहा--'नहीं गुरुदेव! मामा हैं।'

आचार्यप्रवर ने बच्छराजजी से पूछा--'आप इन्हें (मुनि हेमराजजी) को दीक्षा से पहले क्या कहते थे?'

बच्छराज--'भाईजी।'

आचार्यप्रवर की इस बात से बच्छराजजी दुगड़ को स्मृति हुई कि सन् २०१० में जब आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ युवाचार्यश्री महाश्रमणजी श्रीडूंगरगढ़ में पधारे थे। उस समय उन्होंने युवाचार्यश्री को हेमराजजी और अपना संबंध बताते हुए निवेदन किया था कि हेमराजजी मेरे भाणजे हैं। तब आचार्यप्रवर ने उनसे पूछा था कि आप इन्हें क्या कहते हैं?' तब उन्होंने कहा था कि मैं इन्हें भाईजी ही कहता हूं, क्योंकि ये मुझसे उम्र में काफी बड़े हैं।' लगभग आठ वर्ष पूर्व की सामान्य बात का भी आचार्यप्रवर द्वारा यथावत स्मरण श्री बच्छराज दुगड़ और मुनि हेमराजजी के लिए ही नहीं, उपस्थित अन्य दर्शकों व श्रोताओं के लिए आश्चर्य का विषय था। आचार्यप्रवर की प्रखर मेधा और अनुपम स्मरण शक्ति के सामने सभी नतमस्तक थे। इस प्रसंग से भावविह्वल श्री दुगड़ की आंखों से तो हर्षाश्रु ढुलक रहे थे।

स्मृति संबल

- पीपाड़ सिटी निवासी जालना प्रवासी श्री माणकचंद समदरिया (सुपुत्र स्व. श्री भंवरीलालजी समदरिया) का देहावसान हो गया। जालना के सुदृढ़ श्रावक थे। नव तेरापंथ के समय समाज को अखंड रखने में महत्त्वपूर्ण

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

योगदान दिया। गुरुदेव तुलसी उन्हें मराठवाड़ा के लट्ठ भारती श्रावक पुकारते थे। प्रतिवर्ष चातुर्मास में दर्शन-सेवा का लाभ लेते थे। पूरे समदरिया परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था है।

- छापर निवासी सूरत प्रवासी श्री बहादुरसिंहजी नाहटा (सुपुत्र स्व. श्री रेवन्तमलजी नाहटा) का निधन हो गया। वे संघ समर्पित श्रावक थे। नैतिकता के प्रति विशेष जागरूक रहते थे। शांत स्वभावी, सरल व्यक्तित्व उनकी पहचान थी। पूज्य आचार्यश्री कालूगणी और एवं आचार्यश्री तुलसी का छापर चातुर्मासिक प्रवास आपके ही हवेली में हुआ। चारों सुपुत्र एवं पूरा नाहटा परिवार श्रद्धाशील एवं संघ समर्पित है।
- केसिंगा निवासी श्री राधाकृष्ण जैन (सुपुत्र स्व. श्री धूलचंद जैन) का निधन हो गया। उन्होंने जिंदगी भर नशामुक्त, जमीकंद वर्जन एवं चमड़ा वर्जन आदि नियमों का पालन किया। पन्द्रह द्रव्यों की सीमा एवं प्रतिदिन एक सामायिक का क्रम बराबर करते। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं महावीर जैन भवन के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दी। गोशाला आदि सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहते थे। सरल स्वभाव, सत्यवादिता उनकी विशेषता थी। अणुव्रतों के पालन कर अनेक लोगों को अणुव्रती बनने की प्रेरणा भी देते। मूर्तिपूजा और दिखावा उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। गुरु को साक्षात् भगवान मानते थे। पूरे परिवार में उन्हीं की भांति गुरुनिष्ठा है।

स्मारणा

महासभा की लिखित स्वीकृति के बिना तेरापंथी या गैरतेरापंथी किसी भी व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह के द्वारा किसी भी ट्रस्ट व भवन आदि के संज्ञाकरण में 'तेरापंथ' व तेरापंथ-आचार्यों का नाम नहीं जोड़ा जाए। महासभा उसकी लिखित स्वीकृति तभी दे जब वह व्यक्ति या व्यक्ति समूह महासभा द्वारा प्रदत्त मर्यादाओं के पालन के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताए। दैनन्दिन व्यवस्थाओं में महासभा का हस्तक्षेप नहीं रहेगा।
तेरापंथ अथवा तेरापंथ-आचार्यों के नाम से निर्मित ट्रस्ट अथवा भवन आदि के द्वारा महासभा द्वारा निर्धारित मर्यादाओं का अतिक्रमण होने पर नाम के उपयोग के अधिकार को वापिस भी लिया जा सकेगा। यह व्यवस्था पूर्व निर्मित व भविष्य में निर्मित ट्रस्ट, भवन आदि पर भी लागू होगी। यही व्यवस्था तेरापंथ समाज द्वारा संचालित अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि नाम से युक्त ट्रस्ट व भवन के विषय में ज्ञातव्य है।

(श्रावक संदेशिका-धारा ५५)

नवीन घोषित चतुर्मास और समणीकेन्द्र

साध्वी रतनश्रीजी श्रीडूंगरगढ़	मॉडल टाउन, दिल्ली
साध्वी कंचनकुमारीजी, लाडनूं	रोहतक
मुनि रमेशकुमारजी	यशवन्तपुर, बैंगलोर (मुनिश्री रणजीतकुमारजी स्वामी के साथ संयुक्त)
समणी विपुलप्रज्ञाजी	जालना, समणीकेन्द्र

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला